शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

बनारस की मृणकला, परम्परा एवं स्थिति

डॉ0 रतन कुमार
ललित कला विभाग
ललित कला संकाय,
ल0वि0वि0, लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत षोध पत्र बनारस की पारम्परिक मृणकला पर प्रकाष डालने का प्रयास किया गया है। बनारस अपनी कला एवं संस्कृति की अनूठी झलक के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है, साथ ही यहाँ की हस्तषिल्प कला, लोक कला, वस्त्र कला एवं मृणकला आदि की प्रसिद्धि चारों ओर है। प्रस्तुत मेरे इस षोध पत्र का उद्देष्य बनारस की कला का आंकलन कर इसे आम–जन तक पहुँचाना है, जिससे लोग इसके गुणों एवं महत्व से अवगत हो सकें। यह षोध पत्र भारत के वाराणसी में मृणकला, हस्तकला एवं मूर्तिकला की पारम्परिक कला को अन्वेशण करता है। यह वाराणसी की कला को समृद्ध कला के रूप में सांस्कृतिक विरासत के व्यापक सन्दर्भ में रखता है तथा अन्य धर्म जैसे– हिन्दू, बौद्ध आदि के साथ इसके सम्बन्ध पर जोर देता है। साथ ही यह षोध पत्र मृण षिल्प कलाकारों के सामने आने वाली चुनौतियों की जाँच करता है, जिसमें सीमित संसाधन, बाजार तक पहुँच एवं स्थिति सस्ती सामग्रियों से प्रतिस्पर्धात्मक चुनौतियां, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं से असहयोगिता का अभाव आदि षामिल है। यह षोध इस पारम्परिक कला का महत्वपूर्ण एवं सांस्कृतिक धरोहर रूप को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित करता है और सरकारी गैर सरकारी संगठनों से समर्थन करने की अपेक्षा करता है ताकि इस पारम्परिक और अनूठी हस्तषिल्प मृणकला को फलने–फूलने के नये आयाम मिल सकें। साथ ही यह लेख मृणकला के संरक्षण में सहयोग हेतु सुझाव प्रस्तावित करता है जिसमें कलाकारों को वित्तीय लाभ प्राप्त हो

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 रतन कुमार

बनारस की मृणकला, परम्परा एवं स्थिति

शोध मंथन,
दिस0 2017,
पेज सं0 167–170
Artcile No. 27 (SM 667)
http://
anubooks.com?page_id=581

सके और तकनीकी सहायता प्रदान करना उत्पादकों के लिए बिक्री केन्द्र सामग्री के उपलब्धता तथा पारम्परिक तकनीकों को संरक्षित करना आदि षामिल है। लेख इस मूल्यवान सांस्कृतिक कला विरासत को संरक्षित करने के महत्व पर जोर देता है और इसके अस्तित्व को सुनिष्चित करने के लिए ठोस प्रयासों का आह्वान करता है, जिससे यह मृणकला परम्परा सदा के लिए हमारे समक्ष विद्यमान रहे।

बनारस की कला एवं संस्कृति अद्वितीय है। यह बनारस की समष्द्ध संस्कृति परंपरा है। बनारस भारत का सांस्कृतिक केन्द्र है। पुरातत्व, पुराण, भूगोल कला, लोक कला, हस्तषिल्प और इतिहास का एक संयोजन भारतीय संस्कृति का एक बड़ा केन्द्र है। बनारस मुख्यतः हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म से जुड़ा है लेकिन यहां पर कई धार्मिक विष्वासों, पूजा के प्रकार और धार्मिक संस्थानों की झलक पा सकते हैं। यहां कला के रूपों और लोक कला हस्तषिल्प की एक समष्द्ध और अनूठी षैली है। बनारस अपनी खूबसूरत साड़ियों के लिए विष्व विख्यात है। इसके अलावा हस्तषिल्प, वस्त्र, खिलौने, गहने, धातु का काम, लकड़ी, मिट्टी मष्णकला एवं मष्ण मूर्तियों आदि के काम भी लोकप्रिय हैं।

बनारस हिंदुओं का तीर्थ स्थान है यह भारत के प्राचीन षहरों में एक है। यह ज्ञान, दर्षन, संस्कृ ति, भारतीय कला, हस्तषिल्प लोक कला भी केन्द्र रहा है। बनारस अन्य षिल्प कलाओं के साथ ही साथ मृणकला एवं मृण मूर्तियों, खिलौनों के लिए भी जाना जाता रहा है। मृतिका पात्र का प्रयोग हमें इतिहास में मिश्र के पिरामिडों से लेकर हड़प्पा व मोहनजोदड़ो से प्राप्त होता है। मृण पात्र का प्रयोग मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक आवष्यक अंग रहा है। धार्मिक अनुश्ठान से लेकर मांगलिक कार्यों तक सभी अवसरों पर मृतिका पात्रों की आवष्यकता होती है। यह परंपरागत षिल्प आज ग्रामीण अंचलों से बाहर आकर वर्तमान समय में घर की सजावट का एक अंग बन चुका है।

बनारस एक सांस्कृतिक नगरी होने के साथ–साथ छोटे–छोटे तीज त्योहारों का भी बड़ा महत्व माना जाता है। बनारस के कुम्हार पात्रों का निर्माण रोजमर्रा के प्रयोग आने वाले पात्रों के अलावा तीज त्योहारों का ध्यान रख कर उसके अनुसार मष्ण पात्र एक मूर्तियां खिलौने बनाते हैं। बनारस में छोटे–छोटे तीज–त्यौहार एवं धार्मिक मांगलिक अनुश्ठानों का भी बड़ा महत्व है। खास तौर पर इन तीज–त्योहारों, धार्मिक मांगलिक अनुश्ठानों, पूजा आदि के लिए विषेश तरह के आकार के बर्तनों का निर्माण करते हैं जो कि इन अवसरों पर लोगों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। या यों कह सकते हैं मष्ण बर्तनों के बिना धार्मिक, मांगलिक, तीज त्योहारों में आने वाले बर्तनों के बिना अधूरा है। आज भी बनारस के सभी गांवों, षहरों आदि में मष्णपात्र मूर्तियां, खिलौने प्रचुर मात्रा में बनाए जाते हैं। हर दृश्टि से इनका रूप बदल गया है किंतु देष की प्राचीनतम तथा ठोस परंपरा के अनुकूल यह वस्तुएं आज भी जनमानस में लोकप्रिय हैं। धार्मिक तथा अन्य अनुश्ठानों, उत्सवों के अवसर पर आज भी इनका अच्छा व्यापार होता है। परंतु सभ्यता के परिवर्तित चक्र में हमारी बहुत सी कलाएं लुप्तप्राय हो रही हैं। मिट्टी से बने बर्तन, खिलौने, मूर्तियों का स्थान अब प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा प्लास्टिक थर्मोकोल आदि ने ले लिया है। परंतु वर्तमान समय में यह कृतियां आत्महीन होने के अतिरिक्त षिल्प की दृश्टि से निम्नस्तरीय हैं। मषतिका कला जनजीवन के बहुत निकट थी इसमें अपूर्व षक्ति थी इसी कारण सदियों एक यह लोकप्रिय माध्यम बनी रही इस कला में धर्म तथा जीवन के जो व्यापक दर्षन हैं वह भारतीय कला के किसी अन्य माध्यम में नहीं हैं।

प्राचीन समय से आज तक इस षिल्प के बनाने के माध्यम तकनीक भी लगभग वही चली आ रही है। आज के आधुनिक परिवेष के बावजूद भी भारत के लगभग सभी राज्यों में परंपरागत कुम्हार आज भी इस विधि का प्रयोग पात्र निर्माण में करते हैं। जैसे सांचे द्वारा, स्लैब द्वारा, चाक द्वारा, हाथ द्वारा आदि पात्रों व खिलौनों को पकाने के लिए भी परंपरागत ''आवा'' का प्रयोग करते हैं। अन्य षिल्पों की अपेक्षा टेराकोटा षिल्प को अपेक्षाकृत वह स्थान नहीं मिल सका है आज की स्थिति में यह षिल्प कला धीरे–ध ीरे मष्तप्राय हो रही है। इस मष्ण कला पर अन्य माध्यम का भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिसके कारण इस षिल्प से जुड़े षिल्पकार धीरे–धीरे इस कार्य को छोड़कर अन्य व्यवसाय से जुड़ते जा रहे हैं। साथ ही इनकी पीढ़ी भी इस मिट्टी के परंपरागत कार्य से अपने आप को अलग करते जा रहे हैं। उनका जीवन स्तर, आर्थिक व सामाजिक स्थिति आज भी निम्नतर है। साथ ही साथ कार्य संबंध कई कठिनाइयां उत्पन्न होने के कारण भी यह अपने परंपरागत कार्य से अलग हो रहे हैं।

वर्तमान समय में स्थिति

मष्ण षिल्प से जुड़े षिल्पकारों की समस्याएं निम्नमत हैंः–

1. इस षिल्प से जुड़े षिल्पकार (कुम्हार) आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण और आधुनिक संसाधनों की व्यवस्था करने में असमर्थ हैं। परिणामतः वैष्वीकरण एवं प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में तकनीक पर आधारित गुणवत्तापूर्ण कार्य देने में असफल हैं। आज उन्हें ऐसे संसाधनों की जरूरत है जो कुषल हाथों को सषक्त बना सके।
2. षिल्पकारों को अपने बनाई हुई चीजों की बिक्री के लिए स्थानीय स्तर पर कोई स्वतंत्र वर्कषेड, षोरूम एवं दुकानें या मंडी नहीं है ज्यादातर अपने घर या सड़कों के किनारे बिक्री के लिए बाध य हैं।
3. कच्चे माल, मिट्टी, ईंधन, आदि की स्थानीय स्तर पर अनुपलब्धता है।
4. आधुनिक तकनीक, डिजाइन व संसाधनों का अभाव।
5. सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर किये प्रयास का पूरा सहयोग न मिल पाना।

निराकरण एवं सुझाव

1. मष्णकला से जुड़े षिल्पकारों का आपसी नकारात्मक प्रतिस्पर्धा से हटकर गुणवत्तापूर्ण सष्जनात्मक कलाकृतियों का निर्माण कर बाजार में अपनी पकड़ बनानी होगी।
2. सरकार से अपेक्षा है कि इस षिल्प से जुड़े षिल्पकारों के विकास में सहायक आधुनिक तकनीक, मषीन, चाक, भट्टी आदि की सुविधा मुहैया करायें, जिससे गुणवत्तापूर्ण कार्य हो सके। साथ–साथ नई डिजाइन, तकनीक, प्रषिक्षण, स्थानीय स्तर पर कच्चे माल, मिट्टी, ईंधन आदि की उपलब्ध ता सुनिष्चित करने की योजना भी बनानी होगी।
3. स्थानीय स्तर पर इनके कार्यों की बिक्री हेतु षिल्प बाजार, बिक्री केंद्र, मंडी आदि की सुविधा उपलब्ध कराई जाए।
4. सामुदायिक केंद्र बनाए जायें जहां पर अपने कच्चे माल को पकाने आदि की सुविधा हो।
5. इस षिल्प में कच्चा माल (मिट्टी) की उपलब्धता सुनिष्चित कराने के लिए हस्तषिल्पियों, कुम्हारों

को पट्टे पर जमीन आवंटित किया जाए, जिससे न केवल मौजूदा षिल्पियों, बल्कि नए षिल्पियों को स्वरोजगार के रूप में आगे आने में प्रोत्साहन मिलेगा।

आवष्यक है कि समय रहते उपाय करने की, कि भारत की सबसे प्राचीनतम मष्ण कला लुप्तप्राय न हो जाए। जबकि बनारस भारत की प्राचीनतम नगरों में एक है और यहां की मष्ण कला भी उतनी ही पुरानी है। आज भी बनारस में इस कला से जुड़े अच्छे षिल्पकार मौजूद हैं, परंतु संसाधनों के अभाव में इस परंपरागत कार्य को छोड़ने को मजबूर हैं। आज भी बनारस में बने मिट्टी के खिलौने, पात्र अपनी पहचान बनाए हुए हैं। इस प्राचीनतम मष्ण कला को संरक्षित करने की आवष्यकता है, अन्यथा अन्य षिल्प कलाओं की तरह धीरे–धीरे यह भी मष्तप्राय हो जाएगी।

सन्दर्भ

1. 129. भारतीय मर्षत्तिका कला– सतीष चन्द्र
2. 129 (A) प्राचीन मष्णमयी मूर्तिकला–पाण्डेय सुषील कुमार
3. Pottery- Materials and Techniques -David green - 1967
4. Art and Crafts of India- Nicholas Barnard - 1993